CBSE Class 06 Hindi

NCERT Solutions

पाठ-11 जो देखकर भी नही देखते

1. 'जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं' - हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?

उत्तर:- एक बार हेलेन केलर की प्रिय मित्र जंगल में घूमने गई थी। जब वह वापस लौटी तो हेलेन केलर ने उससे जंगल के बारे में जानना चाहा तो उसकी मित्र ने जवाब दिया कि कुछ खास नहीं तब उस समय हेलेन केलर को लगा कि सचमुच जिनके पास आँखें होती हैं , वे बहुत ही कम देखते हैं। हेलेन को ऐसा इसलिए महसूस हुआ कि उन्हें प्रकृति की वस्तुओं को छूने से इतना आनंद आता है तो दुनिया के सुंदर रंग उनकी मित्र की संवेदना को छू क्यों नहीं पाए।

2. 'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

उत्तर:- प्रकृति के अनमोल खजाने को, उसके अनमोल सौंदर्य और उसमें होने वाले नित्य-प्रतिदिन बदलाव को 'प्रकृति का जादू' कहा गया है जिसमें ऋतुओं का बदलना , वसंत में फूलों का खिलना ,बागों में पेड़ों पर बैठे पक्षी , कालीन के समान फैले हुए घास के मैदान आदि सम्मिलित हैं ।

3 . **कुछ खास तो नहीं'- हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों हुआ?**

उत्तर:- एक बार हेलेन केलर की प्रिय मित्र जंगल में घूमने गई थी।जब वह वापस लौटी तो हेलेन केलर ने उससे जंगल के बारे में जानना चाहा तब उसकी मित्र ने जवाब दिया कि उसने कुछ खास नहीं देखा ।

यह सुनकर हेलेन केलर को बहुत आश्चर्य हुआ कि लोग कैसे आँखें होकर भी नहीं देखते हैं क्योंकि वे तो आँखें न होने के बावजूद भी प्रकृति की बहुत-सारी चीज़ों को केवल स्पर्श से ही महसूस कर लेती हैं।

4. हेलेन केलर प्रकृति की किन चीज़ों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं? पाठ पढ़कर इसका उत्तर लिखो।

उत्तर:- हेलन केलर भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती थी। वसंत के दौरान वे टहनियों में नई कलियों , फूलों की पंखुडियों की मखमली सतह और उनकी घुमावदार बनावट को भी छूकर पहचान लेती थीं। वे चिड़िया के मधुर स्वर को भी सुनकर पहचान लेती थीं।

5. 'जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से हरा-भरा जा सकता है।' - तुम्हारी नज़र में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर:- दृष्टि हमारे शरीर का कोई साधारण अंग नहीं है बल्कि यह तो ईश्वर प्रदत्त नियामत है। इसके ज़रिए हम प्रकृति निर्मित और मानव निर्मित हर एक वस्तु का आनंद उठा सकते हैं। ईश्वर के इस अनमोल तोहफ़े से हम अपना जीवन खुशियों से भर सकते हैं अत: हमें ईश्वर का शुक्रगुज़ार होते हुए इसकी कद्र भी करनी चाहिए।

6. आज तुमने अपने घर से आते हुए बारीकी से क्या-क्या देखा-सुना? मित्रों के साथ सामूहिक चर्चा कीजिए।
उत्तर:- रोज़ की तरह आज भी मैं पैदल ही अपने घर जा रही थी। विद्यालय के फाटक से बाहर निकलते ही मुझे बाहर बैठने वाले खोमचे वालों की,बच्चों को अपने सामान की ओर आकर्षित करने वाली आवाज़ें सुनाई पड़ीं। आगे बढ़ने पर रास्ते पर कार, साइकिलें, रिक्शा, बस की एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ दिखाई पड़ी। उनसे बचकर जब मैं आगे मुड़कर मेरे घर की ओर जाने वाली शांत सड़क पर निकली तो मुझे सड़क के दोनों ओर लगे गुलमोहर, अशोक और आम के पेड़ों के झूमने से ठंडी हवाओं का स्पर्श महसूस हुआ। इन्हीं पेड़ों पर कुछ नन्हीं गिलहरियाँ भी रहती हैं जो सर्र से नीचे-ऊपर आ-जा रही थीं । थोड़े समय तक में इनकी इस क्रीड़ा में खो-सी गई परन्तु फिर माँ का ध्यान आते ही मैं दौड़कर घर की ओर चल पड़ी।

---

7. कान से न सुनने पर आस-पास की दुनिया कैसी लगती होगी? इस पर टिप्पणी लिखो और साथियों के साथ विचार करो।
उत्तर:- ईश्वर प्रदत्त शारीरिक अंगों में कान भी शरीर का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इसके काम न करने पर हमें बाहरी दुनिया बड़ी ही अजीब-सी लगती होगी। हमारे लिए विचारों का आदान-प्रदान करना मुश्किल हो जाएगा क्योंकि हम न तो किसी की बात समझ पाएँगें और ना ही किसी को अपनी बात समझा पाएँगें।

---

8. कई चीज़ों को छूकर ही पता चलता है, जैसे - कपड़े की चिकनाहट या खुरदरापन, पत्तियों की नसों का उभार आदि। ऐसी और चीज़ों की सूची तैयार करो जिनको छूने से उनकी खासियत का पता चलता है।
उत्तर:- अखरोट का खुरदुरापन, फूलों को छूने से उनका मखमली अहसास, घास को छूने से होने वाला नरम अहसास।

---

9. हम अपनी पाँचों इंद्रियों में से आँखों का इस्तेमाल सबसे ज्यादा करते हैं। ऐसी चीज़ों के अहसासों की तालिका बनाओ जो तुम बाकी चार इंद्रियों से महसूस करते हो -
सुनना, चखना, सूँघना, छूना।
उत्तर:-

सुनना (कान)	चखना (जीभ)	सूँघना (नाक)	छूना (त्वचा)
कर्कश ध्वनियाँ - कुछ पशु-प्राणियों की आवाज़ें	मिठास-फल, मिठाई	सुगंध - इत्र, फूलों की खुशबू, खाद्य पदार्थ	गर्म - दूध, चाय या अन्य पेय पदार्थ
मधुर-ध्वनियाँ -कोयल की बोली, पक्षियों की चहचहाहट , गीत और संगीत के मधुर स्वर	कटु स्वाद - करेला, दवाइयाँ	दुर्गंध - गंदा नाला	ठंडा - बर्फ़ , शरबत
	तीखा, नमकीन स्वाद - मिर्च, नमक, सब्ज़ी		मुलायम - फूलों की पंखुड़ियाँ

---

10. तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने का मौका मिले जिसे दिखाई न देता हो तो तुम उससे प्रकृति के उसके अनुभवों के बारे में क्या-क्या पूछना चाहोगे और क्यों?

उत्तर:- मुझे यदि किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने का मौका मिले तो मैं उससे यही जानना चाहूँगा कि वे किस प्रकार से दिन और रात का आभास करते हैं? प्रकृति और रंगों के बारे में उनकी कल्पना कैसी होती है? जब वे किसी वस्तु को छूते हैं तो वे किस प्रकार से उसकी आकृति बनाते हैं?

• भाषा की बात

11 .पाठ में स्पर्श से संबंधित कई शब्द आए हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। बताओ कि किन चीज़ों का स्पर्श ऐसा होता है - चिकना, चिपचिपा, मुलायम, खुरदरा, लिजलिजा, ऊबड़-खाबड़, सख्त, भुरभुरा।
उत्तर:- चिकना - घी
चिपचिपा - गोंद
मुलायम - रेशमी कपड़ा
खुरदरा - कपड़ा
लिजलिजा - शहद
ऊबड़-खाबड़ - पेड़ का तना
सख्त - पत्थर
भुरभुरा - रेत

12. अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। रेखांकित संज्ञाएँ क्रमश: किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे जुड़े शब्दों को हम सिर्फ़ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। नीचे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़ो और समझो। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और कुछ क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखो -
मिठास, भूख, शांति, भोलापन, बुढ़ापा, घबराहट, बहाव, फुर्ती, ताजगी, क्रोध, मज़दूरी।
उत्तर:-

क्रिया से बनी भाववाचक संज्ञा	विशेषण से बनी भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा से बनी भाव वाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
घबराना से घबराहट	बूढ़ा से बुढ़ापा	मज़दूर से मज़दूरी	क्रोध और फुर्ती शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द हैं।
बहाना से बहाव	ताज़ा से ताज़गी		
	भूखा से भूख		
	शांत से शांति		

	मीठा से मिठास		
	भोला से भोलापन		

13. मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ।
उस बगीचे में अमलतास, सेमल, कजरी आदि तरह-तरह के पेड़ थे।
ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द देखने में मिलते-जुलते हैं, पर उनके अर्थ भिन्न हैं। नीचे ऐसे कुछ और समरूपी शब्द दिए गए हैं। वाक्य बनाकर उनका अर्थ स्पष्ट करो -
अवधि - अवधी, में - मैं, मेल - मैला, ओर - और, दिन - दीन, सिल - सील।
उत्तर:-

अवधि - इतने बड़े कार्यक्रम के लिए दो सप्ताह की अवधि कम है। अवधी - कवि तुलसीदास कृत रचना 'रामचरित मानस ' अवधी में लिखी गई है ।
में - कटोरी में खीर है। मैं - मैं तो आज मेले जा रहा हूँ।
मेल - इस गाँव के किसानों में बड़ा मेल है। मैला - यह कपड़ा कितना मैला है?
ओर - नदी के दोनों ओर हरे-भरे वृक्ष लहरा रहे थे। और - नीरज और नीरव सगे भाई हैं।
दिन - इस कार्य को तुम दिन में ही समाप्त कर लेना। दीन - दीन व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए।
सिल - सिल पर पीसे मसालों का स्वाद बढिया होता है। सील - इस लिफ़ाफे की सील खोल दो।